

Hindi B – Higher level – Paper 1
Hindi B – Niveau supérieur – Épreuve 1
Hindi B – Nivel superior – Prueba 1

Wednesday 4 May 2016 (afternoon)

Mercredi 4 mai 2016 (après-midi)

Miércoles 4 de mayo de 2016 (tarde)

1 h 30 m

Text booklet – Instructions to candidates

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

Livret de textes – Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

Cuaderno de textos – Instrucciones para los alumnos

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क

पचमढी

पचमढी ऐसा मनोहर स्थान है, जहाँ प्रकृति ने अपनी छटा असंख्य मोहक रूपों में अभिव्यक्त की है। यह भारत के हृदय का सर्वाधिक हरा-भरा खज़ाना है। सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं की इस नयनाभिराम पहाड़ी सैरगाह में हर रोज़ प्रशांत सौंदर्य से भरी भोर होती है। पहाड़ियों से लिपटी हरित छायावलियों की शांति इसकी घाटियों में उतरती है और यहां चारों ओर बहते जल की मंद-मंद ध्वनि को प्रफुलित कर देती है। प्रशांत वन मैदान की ओर जाते अश्व मार्ग, जंगली बांस और जामुन के उपवन, साल वृक्षों के सघन वन, बांसों के सुंदर झुरमुट, महुआ और आंवले के फलदार वृक्ष, गूलर की कतार सब मिलकर पचमढी को बहुरंगी और निराली शोभा प्रदान करते हैं।



पचमढी की घाटी, मैदान और गिरिकन्दराओं की भूलभुलैयाओं का निर्माण युगों पहले हुआ। यह हवा और मौसम के थपेड़ों ने लाल बलुआ पत्थरों को तराश कर किया, जिनकी रंग पंक्तियों की छायाएं यहां शोभित हैं। सूरज की धूप में यहां के झरनों का रजत सौंदर्य देखते ही बनता है। गहरे नीले रंग के पोखर यहां आनंद के स्रोत हैं जो सैलानियों और पर्यटकों को अपने पास आने का मौन निमंत्रण देते हैं। सभी ओर वन्य प्राणियों के स्वाभाविक बसेरे हैं। लंगूर, सांभर, गौर, रीछ, जंगली कुत्ते और चीते इन जंगलों में सहज विचरण करते हैं। यहां प्रकृति की इस अनूठी भव्यता को आदिमानव की वैविध्यपूर्ण रचना कृतियां एक और नया पहलू देती हैं।

पचमढी में पुरातात्विक वस्तुओं का कोष भरा पड़ा है। महादेव पहाड़ियों के शैलाश्रय और उनमें चित्रित शैल-चित्रकारी की बहुलता, देखने वालों को आश्चर्य से भर देती हैं। इनमें ज़्यादातर चित्रों का काल 500 से 800 ईस्वी के बीच का माना गया है, किंतु प्रारंभिक चित्रकारी 10000 वर्ष पुरानी होने का अनुमान है।

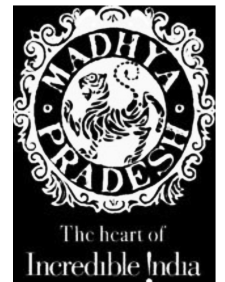
कैसे पहुँचे

वायु-सेवा: निकटवर्ती हवाई अड्डा भोपाल (195 कि. मी.) है।

रेल सेवाएं: इलाहाबाद के रास्ते मुंबई-हावड़ा मुख्य मार्ग पर विपरिया (47 कि. मी.) सबसे सुविधाजनक रेलवे स्टेशन है।

सड़क मार्ग: भोपाल, हौशंगाबाद, नागपुर, पिपरिया और छिंदवाड़ा से पचमढी के लिए नियमित बस-सेवाएं उपलब्ध हैं। पिपरिया से टैक्सियां भी मिलती हैं।

अनुकूल मौसम: वर्षभर।



पाठांश ख

यही आशीष मैं तुम्हें देता हूं

3 अगस्त, 1918, शांतिनिकेतन

कल्याणीयासू

आज दोपहर के समय बिस्तर पर लेटा-लेटा तनिक सोया, तनिक जागता रहा। तनिक मुग्धता से आसमान देख रहा था कि इसी समय तुम्हारा पत्र मिला। शरद काल की तरह आजकल मौसम मनभावन हो उठा है। शांतिनिकेतन के घर के बरामदे में बैठकर एक वृहद निस्तब्धता में डूबा जा सकता था। रात को जब इस बरामदे में सोया रहता तब आकाश के समस्त तारे मानो आस-पास के पड़ोसियों की तरह अपनी खिड़कियों से मुझे निहारते हुए क्या कहते, वह मैं सुन नहीं पाता, परन्तु उनके चेहरे-आंखों की मुस्कराहट आ आकर मुझे स्पर्श करती। विश्वप्रकृति के साथ घनिष्टता करने में एक बड़ी सुविधा यह है कि वह आनंद तो देती है पर बदले में कुछ नहीं मांगती। वह अपनी घनिष्टता को फंदे की तरह बांधने का प्रयत्न नहीं करती व मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है।



मनुष्य में लालच है, आसक्ति है, कई तरह की प्रवृत्तियां हैं। वह दूसरे व्यक्ति को भोग के लिए, अपने स्वार्थ के लिए वश में कर जबरदस्ती बंदी बनाए रखना चाहता है। इसीलिए अधिकांश क्षेत्र में उसका प्रेम मोह के भीतर से दुख पैदा करता है और वह दुख पाता है। वह सिर्फ अपने हिस्से का हिसाब रखता है तथा उसी पर केंद्रित रहता है। इससे कल्याण नहीं होता, बल्कि मानव की भयानक क्षति होती है। संकट पैदा होता है और शोक-दुख का कारण जन्म लेता है। सबसे बड़ा प्रेम वह है, जो न केवल मनुष्य को अपनी ओर खींचता है, बल्कि विशालता की ओर अग्रसर कर, मुक्ति में सहायक बन, भले की ओर प्रेरित कर आनंद प्रदान करता है। यह प्यार दूर रहकर भी निकट रहता है और निकट रहकर भी नहीं घेरता। यही प्रेम ईश्वरीय दया के रूप में मानव के समीप आता है और स्पर्शमणि की तरह जो कुछ अप्रीतिकर, मलिन है, उसे उज्ज्वल कर निर्मल कर देता है। इसमें संशय नहीं, क्लान्ति नहीं, ग्लानि नहीं। विश्व-कल्याण के लिए यह प्रेम तुममें विकसित हो यही आशीर्वाद मैं तुम्हें देता हूं।

तुम्हारा रविदादा

लेखक- रवीन्द्रनाथ टैगोर, रत्न चंद "रत्नेश", अहा ज़िंदगी मई (2015)

पाठांश ग

स्वतंत्रता की अपनी सीमा होती है

इंटरनेट एक ऐसा मंच है, जिसके बगैर हमारा काम नहीं चल सकता। इसके द्वारा हम लाखों लोग एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, विचार तरंगों के प्रवाह को आत्मसात करते हैं और ऐसी जानकारियों से अपने को समृद्ध बनाते हैं, जो अन्यथा नहीं मिल सकतीं। यही नहीं, इस माध्यम में ऐसी संभावनाएं छिपी हैं, जिनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते। क्या ऑनलाइन स्वतंत्रता की कोई सीमा होनी चाहिए? इस सवाल को अभी तक सुलझाया नहीं जा सका है और मैं यह कहने का दुस्साहस करूंगा कि इन्हें सुलझाया भी नहीं जा सकेगा क्योंकि सभी प्रस्तावित समाधान अतिरंजित और अव्यावहारिक किस्म के हैं। सरकार को इंटरनेट पर नियम-कायदे लागू करने की अनुमति देना परेशानी मोल लेना होगा। सरकारों का जैसा स्वभाव होता है, उसमें वे इस अधिकार-शक्ति का इस्तेमाल अपने हित साधने के लिए करेंगे। दूसरी तरफ, नियम-कायदे नहीं होने से भी ढेरों मुश्किलें-खड़ी हो जाती हैं।

मैं मानता हूँ कि इंटरनेट को शासित किया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट सूचना औद्योगिकी कानून, 2000 की धारा 66ए को वैधता और शक्तियों के बारे में फैसला करने की प्रक्रिया में है। यह धारा कंप्यूटर या संचार उपकरण के साधनों से किसी भी ऐसी सूचना को, जो अत्याधिक आपत्तिजनक या धमकाने वाली प्रकृति की है, या जो तकलीफ असुविधा, खतरे, अवरोध, अपमान, क्षति, आपराधिक धमकी, दुश्मनी, नफरत या दुर्भावना का कारण बनती है, प्रचारित-प्रसारित करने को दंडनीय अपराध मानती है। निश्चित रूप से, क्या चीज आपत्तिजनक, तकलीफ, या असुविधा पहुंचाने वाली है, यह अंततः सभी की अपनी-अपनी राय पर निर्भर करता है और जब इंटरनेट पर सूचना के नियंत्रण या उसे कानून के जरिए विनियमित करने की बात आती है तो यही असली समस्या है। दूसरी तरफ, भड़काने वाली या अत्याधिक आपत्तिजनक जानकारी कुछ लोगों या समुदायों को ऐसी शरारतपूर्ण कार्रवाइयां करने के लिए उकसा सकती है, जिन्हें काबू कर पाना मुश्किल हो। अभिव्यक्ति की आजादी के दायरे तय करने में स्व-नियमन की महत्वपूर्ण भूमिका है और यही आगे का रास्ता निकालने में सहायक है।

दूसरा तरीका यह हो सकता है कि इंटरनेट सेवा प्रदाताओं और सीमा के आर-पार फैले उसके सक्रिय भागीदारों के लिए सबकी आपसी स्वीकृति से साझा नियम तय किए जाएं। इस पूरी बहस की सबसे केंद्रीय बात है हममें से हरेक की वह योग्यता, जिसके आधार पर अन्य लोगों के प्रति हम अपनी जिम्मेदारियों को समझ और स्वीकार सकें। जिस तरह हमें आमने-सामने बातचीत करते हुए गाली-गलौच नहीं करना चाहिए, और न ही हम ऐसा कर सकते हैं, उसी तरह उत्तरदायी नागरिक होने के नाते हमें दूसरों की पीठ पीछे भी ऐसा कतई नहीं करना चाहिए। हमें स्वीकार करना ही चाहिए कि जैसे हमारी संवेदनशीलताओं की रक्षा की गई है, वैसे ही दूसरों के लिए भी उनकी रक्षा की जानी चाहिए। जैसे हमारे लिए अपनी आस्थाएं मूल्यवान हैं, वैसे ही



35

दूसरों के लिए भी वह उतनी ही मूल्यवान हैं। जैसे हम अपनी आस्थाओं पर आक्रमण करने वाले को सहन नहीं करते, वैसे ही उन लोगों की असहिष्णुता के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, जिनकी आस्था पर हम हमला करते हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैंने क्या स्वर अपनाया है। निस्संदेह मैं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्ष में हूँ, लेकिन जीवन में कुछ भी सीमारहित नहीं होता, अत्यधिक स्वतंत्रता में ही टकराव के बीज हैं। हमें इससे दूर रहना चाहिए और शांति तथा सौहार्द के लिए स्वतंत्रता को गले लगाना चाहिए।

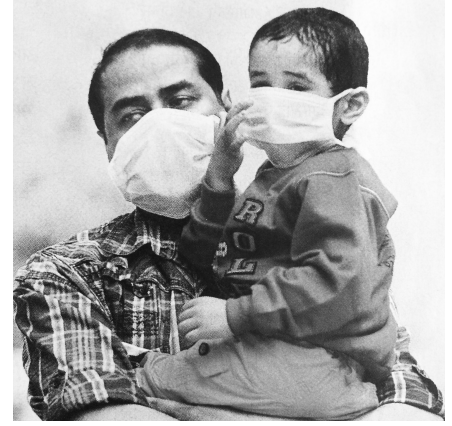
कपिल सिब्बल, *इंडिया टुडे* (2015)

पाठांश घ

बच्चों को बचाना बेहद जरूरी

[- X -]

हमने वातावरण में हानिकारक गैसों, कण और दुर्गंध जोड़कर इसके संतुलन को नष्ट कर दिया। ये प्रदूषक बिजली उत्पादन, तेल शोधशाला और औद्योगिक विनिर्माण केंद्रों में कोयला दहन से आए हैं। प्रदूषण वाहनों के धुएं से होता है।



[- 1 -]

- 5 कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली छोटे बच्चों को वायु प्रदूषण से असुरक्षित बना देती है। बच्चे प्रदूषण के सबसे अधिक शिकार होते हैं, क्योंकि जन्म के समय उनके फेफड़े, दिमाग और प्रतिरक्षा प्रणाली अपरिपक्व होती हैं और छह साल की उम्र तक तेजी से परिपक्व होती हैं। इस अवधि में श्वसन तंत्र पर परत चढ़ाने वाली कोशिकाओं की परत बहुत कोमल होती है और वायुमार्ग संकीर्ण होता है, जो उन्हें प्रदूषण जनित बीमारियों के संदर्भ में दुर्बल बना देता है।
- 10

[- 2 -]

- बच्चे घर से बाहर अधिक समय बिताना चाहते हैं और खेलने में मेहनत लगती है, जिससे वे वयस्कों की तुलना में बाहर की हवा में ज्यादा सांस लेते हैं। अधिक शारीरिक थकावट के कारण बच्चों में नाक की जगह मुंह से सांस लेने की प्रवृत्ति भी ज्यादा होती है। इससे सांस के छनने की प्रक्रिया एक स्तर कम हो जाती है। बच्चों में सांस लेने की दर भी वयस्कों की तुलना में अधिक होती है।
- 15

[- 3 -]

- हमारे वातावरण में अवरोध पैदा करने वाले वायु प्रदूषक इतने खतरनाक हैं कि उनसे अल्पकालिक संपर्क भी फेफड़ों की कोशिका स्तर पर चोट पहुंचा सकता है। सल्फ्यूरिक एसिड बलगम की सफाई को बाधित करता है और ओजोन इम्यूनोनिटी के स्तर को प्रभावित करता है, जो संक्रमणों से लड़ने की शरीर की क्षमता को बाधित करता है। ओजोन और अम्लीय एयरोसोल्स श्वसन नली में लगातार सूजन पैदा करते हैं और श्वास क्रिया को बाधित करते हैं।
- 20

[- 4 -]

- अब गंवाने के लिए समय नहीं बचा है। दूसरे शब्दों में, हमारे बच्चों की सुरक्षा, और हमारे सामूहिक भविष्य की सुरक्षा वायु प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों को रोकने पर टिकी हुई है। हमें वायु प्रदूषण के प्रति एक यथार्थवादी, बाजारोन्मुख दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है जो जीवनशैली पर अंकुश लगाए बिना विकास की गति को बनाए रखे।
- 25

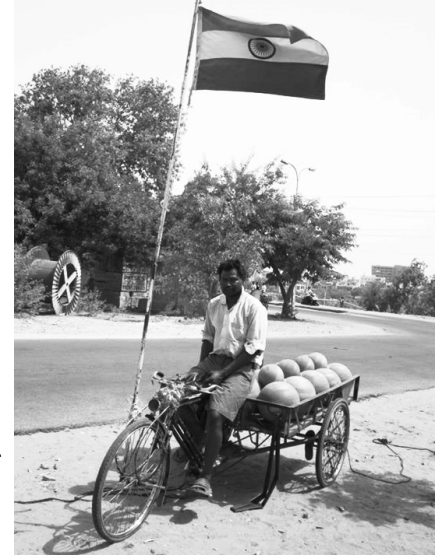
इन दिनों, बच्चों के समक्ष वायु प्रदूषण से उत्पन्न खतरे उनके जन्म से भी पहले हो जाते हैं। वायु प्रदूषण का सामना करने वाली माताओं के लिए स्वलीनता से पीड़ित बच्चे को जन्म देने की संभावना दो गुना अधिक होती है। वायु प्रदूषकों से अधिक सम्पर्क बच्चों में दमा बिगाड़ देता है और तीव्र एलर्जी जैसे दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभाव पैदा कर देता है। तंबाकू सेवन, धूम्रपान या वाहनों से होने वाले उत्सर्जन के संपर्क में आने वाले बच्चों में मोटापे का जोखिम भी बढ़ सकता है। वायु में तिरते कण और उनके धात्विक घटक, जो रक्त-मस्तिष्क अवरोध के पार निकल सकते हैं, उनके संपर्क में आने वाले बच्चों को मस्तिष्क में सूजन होने और तंत्रिका तंत्र में विकृति होने के परिवर्तन का जोखिम अधिक होता है, जिसमें मानसिक रोग या पार्किंसंस रोग शामिल हैं।

डॉ जगजीत सिंह बत्रा, *इंडिया टुडे* (2015)

पाठांश ड

मुझे देश से प्रेम है

रामप्रसाद बैरवा जीवन की कठिनाईयों से जूझते हुए गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले एक इंसान हैं। ये कभी स्कूल नहीं गए और इनका दिन सुबह उठने से रात को सोने तक पेट भरने का इंतज़ाम करते हुए ही बीतता है। इनका जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण सराहनीय है। देशप्रेम इनके जीवन की प्रेरणा है और अपने ठेले पर तिरंगा झंडा लहराने की विशिष्ट रुचि इनके मन को प्रसन्न करती है। कुछ लोग इन्हें “झंडेवाला” कहकर बुलाते हैं, तो कुछ इनकी भावनाओं का अत्यधिक सम्मान करते हैं। यह राजस्थान के चाकसू (जयपुर) के रहने वाले हैं। सुबह 5.30 बजे उठकर ये अपने ठेले पर लगे डंडे में तिरंगा फहराते हैं। दिनभर ठेला दौड़ाते हुए खुद भले ही धूल मिट्टी में सन जाएं, लेकिन इनका झंडा एकदम स्वच्छ रहता है। सूरज डूबने से पहले इसका विधिवत अवरोहण भी करते हैं।



आपको ये शौक कैसे लगा?

- 15 16-17 साल की उम्र से ही भारतीय इतिहास के शूरवीरों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। एक दरोगा ने कहा अगर तुम इतने ही देशभक्त हो तो अपने ठेले पर झंडा लगाया करो। एक दिन शहर के जिला न्यायाधीश ने मुझे बुलवाया और एक कागज़ पर मोहर लगाकर रोज़ झंडा लगाने की अनुमति दी।

आपके बच्चे आपको ऐसा करने से मना करें तो क्या करेंगे?

- 20 उन्हें प्रेम से समझाऊंगा यही मेरा जीवन है, मुझे देश से प्रेम है, जीने दो मुझे मेरी तरह से।

आप जीवन का सबसे यादगार दिन किसे मानते हैं?

1993 की बात है, राष्ट्रपति का कारवां जा रहा था, मैं सड़क किनारे अपना ठेला लेकर खड़ा था। उन्होंने अपनी गाड़ी रुकवाई और मेरा नाम पूछ कर कहा कि तुम सच्चे देशभक्त हो, ऐसे ही रहना। मुझे दिल्ली में राष्ट्रपति भवन से बुलावा भी आया था।

अरुण लाल, *अहा ज़िंदगी* (2015)